B.A. I.
Paper - II
Lec - III
Dr. Ashish Kumar Pandey.

Topic - 'Pragmatism' (उपयोगितावाद) (1)

मूल्यांकन — जहाँ हम एक-एक करके सभी सिद्धान्तों का मूल्यांकन करेंगे।

पर्स के विचार का मूल्यांकन — (1) यह सही है कि पर्स ने मुख्यतः अर्थ के सिद्धान्त को अपना लक्ष्य रखा, फिर भी इसी से संबंधित सत्य का भी सिद्धान्त दिया। उनके अनुसार सत्य शोधार्थी वर्षों से लगातार लगे हुए सत्य के अन्वेषकों का वैज्ञानिक समूह की स्वीकार्यता, परन्तु ऐसी स्थिति पाना असंभव सा है। इतिहास में शायद ही इसके उदाहरण मिलते हैं।

(2) पर्स सत्य को दृढ़ विश्वास से जोड़ते हैं एवं इस प्रक्रिया में आगे बढ़ते जाते हैं। इसके चिन्तन हमारा एक आदर्श विश्वास की ओर संकेत करता है जिसके आगे अन्वेषण संभव नहीं क्योंकि वह अपरिवर्तनीय विश्वास होगा। लेकिन परम सत्य भी होगा। आलोचकों द्वारा यह आपत्ति हो सकती है कि पर्स निरपेक्षवाद के विरुद्ध होते हुए, भी यह आपत्ति हो सकती है कैसे इस आदर्श की सीमा भी मान ईश्वर का सकते अथवा स्वीकार होते हुए हैं? स्पष्ट उत्तर नहीं मिलता।

(3) पर्स के विचार में तार्किक कठिनाई भी है क्योंकि सत्यता का निर्णायक वैज्ञानिक समूह की स्वीकार्यता में है तब तो भविष्य में एक व्यक्ति की भी अस्वीकार्यता आ गई तो विश्वास को ही पूर्णतः सत्य नहीं कहा जाएगा, तार्किक आधार पर एक व्यक्ति उसे न माने तो वह असत्य सिद्ध होगा। अतः किसी भी प्रतिज्ञप्ति के सत्य होने की संभावना बहुत क्षीण है।

जेम्स के विचार का मूल्यांकन — (1) जेम्स ने सत्य का अर्थ उपयोगिता कहा जो सही नहीं है, क्योंकि जेम्स ने किसी विचार को सत्य होते हुए भी उपयोगी नहीं माना तो कोई व्याघात या विरोध नहीं होता। दूसरे सत्य उपयोगी नहीं माना तो कोई व्याघात या विरोध नहीं होता। इससे दोनों को समानार्थक मानने को, उपयोगिता कहना तार्किक नहीं। ऐसी बात होती है।

(2) उपयोगिता पर सफलता को निर्भर बनाने से कठिनाई यह होगी कि किसी भी विश्वास के सभी परिणामों का सही पता लगाना असंभव सा है।

(3) परिणामों या उपयोगिता को ही निर्णायक मानने से सत्यता सापेक्ष, अनिश्चित एवं व्यक्तिगत हो जाएगी।

(4) इससे अलौकिकता को भी प्रश्रय मिलेगा। सत्यता को सिद्ध करने के लिए ② लौकिक तर्क भी अपर्याप्त क्योंकि किसी भी व्यक्ति के लिए विश्वास का उपयोगी होना उसके लिए सत्य होना अर्थात् जो सत्य या असत्य के लिए लौकिक तर्क अप्रासंगिक होंगे।

(5) इस आधार सत्यता का संप्रत्यय अनुपयोगी हो जाएगा। क्योंकि अपने आधारभूत विचारों के आदान-प्रदान में हम सत्य को एक वस्तुनिष्ठ, निरपेक्ष एवं निर्वैयक्तिक धारणा मानते हैं; जबकि जेम्स इसे स्वीकार नहीं करते।

(6) कभी-कभी असत्य विश्वास भी लाभप्रद एवं सत्य विश्वास हानिकारक हो जाते हैं।

<u>ड्युवी के विचार का मूल्यांकन</u> — ① ड्युवी ने सत्यता को समय-सापेक्ष कहा था यानी अर्जित गुण कहा था। परन्तु इसके नाटकीय परिणाम उत्पन्न हो जाते हैं। यानी कि सत्यता एवं सत्यता के प्रमाणीकरण के भेद को ड्युवी खत्म करते हैं जो सही नहीं।

(2) ड्युवी के अनुसार विश्वास में सत्यता स्वयं नहीं होती, अपेक्षकों की परीक्षा द्वारा अर्जित होती है। परन्तु लोग विश्वास के साथ यह सही नहीं है।

<u>शिलर के विचार का मूल्यांकन</u> ① शिलर उग्र व्यवहारवादी हैं। किसी ज्ञान को उन्होंने अनिवार्य नहीं माना, यहाँ तक कि गणित के ज्ञान को भी उन्होंने सापेक्ष माना जो अनुचित है।

(2) सत्य को उपादेयता या निर्भर मानने से जो दोष जेम्स में आते हैं; वे सभी शिलर में भी आ जायेंगे।

<u>भारतीय मत की आलोचना</u> — इसमें भी व्यवहारवाद के जितने दोष हैं, वे सभी आ जाते हैं।

<u>निष्कर्ष</u> — उपर्युक्त विवेचना से हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि व्यवहारिकतावाद का सिद्धान्त पूर्णतः संतोषप्रद नहीं है फिर भी पूर्णतः गलत भी नहीं है। सत्यता-मूलक दो प्रश्न हैं। ① सत्यता का स्वरूप क्या है? ② सत्यता का आधार क्या है? पहले प्रश्न के उत्तर में यह सिद्धान्त संतोषप्रद नहीं है। दूसरे प्रश्न के उत्तर में यह सिद्धान्त अंशतः संतोषप्रद है। फिर भी यह एक समुचित व्यावहारिक कसौटी अवश्य प्रदान करता है जो कि हमारे दैनिक जीवन के लिए एक लाभप्रद सिद्धान्त हो सकता है।

— X —